परमेश्वर बुराई में से भलाई उत्पन्न करता है

प्रार्थना :''हे प्रिय प्रभु, कृपया इस अध्ययन द्वारा बच्चों को यह सिखाएं कि आप विश्वासियों के लिए सब बातों द्वारा भलाई उत्पन्न करते हैं।'' आमीन।

बच्चों को सिखाने से संबंधित सभी गतिविधियों को उपयोग में लाएं।

संभव हो तो चित्र को रंगों से भराएं।

प्रेरितों के काम 27:13 से 28:10 तक किसी बालक से पढ़ाएं। यह वृतान्त बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर विरोधी परिस्थितियों में भी अपने लोगों को प्रयोग करके संसार को शुभ संदेश और आशीष देता है।

बच्चों से ये प्रश्न पूछें :

- पौलुस को यह कैसे ज्ञात हुआ कि जहाज़ में सवार यात्रियों की हानि नहीं होगी? *(पद 23-25)*
- पौलुस के लिए परमेश्वर की योजना क्या थी? *(पद 24)*
- माल्टाद्वीप के लोगों ने पौलुस को देवता क्यों समझा? *(पद 28:5-6)*
- माल्टा के लोगों ने उनके द्वीप में चंगाई लाने के लिए पौलुस के प्रति धन्यवाद किस प्रकार प्रकट किया? *(पद 28:10)*
- किस प्रकार परमेश्वर ने बुरी स्थिति से पौलुस द्वारा अन्य लोगों के लिए भलाई उत्पन्न की?

पौलुस का जहाज़ टूटने की घटना पर नाटक

आराधना के मुख्य संचालक के निर्देशन मे बच्चों द्वारा एक नाटक प्रस्तुत करने का प्रबन्ध कीजिए। नाटक में भाग लेने वाले पात्रों की यदि कमी हो तो पड़ौस के बच्चे बुलाकर सहायता ली जा सकती है। यह एक उनके लिए ख्रीस्त के विषय जानने का अच्छा करने की आवश्यकता नहीं हैं, बच्चों को कहानी की जानकारी होना काफी है, वे अपने आप भी अन्दाज़े से बोल सकते हैं कि उन्हें क्या कहना चाहिए।

बड़े बच्चे या समझदार बच्चे ये भूमिकाएं करें:

- कहानी का सारांश इसके द्वारा प्रस्तुत किया जाए, बच्चों को स्मरण कराया जाए कि उन्हें कब क्या बोलना है, और क्या करना है।

- पौलुस
- पुबलियुस, जिसने पौलुस को अपने घर बुलाया था।

छोटे बच्चे ये भूमिकाएं करें :

- जहाज़ का कप्तान
- जहाज़ के मल्लाह
- आग के आसपास बैठे माल्टाद्वीप के लोग

नाटक का प्रथम भाग : तुफ़ान (प्रेरित 27:13-30)

उद्घोषक : प्रेरि. 27:13-30 को पढ़ें या मुखाग्र रूप से कहानी सुनने के बाद यह कहें, 'सुनें कि मल्लाहों ने शोर मचाते हुए क्या कहा...'

मल्लाह : चिल्लाते हुए, मुझे इस तुफ़ान से डर लग रहा है, अब हम लोग कहीं मर तो नहीं जाएंगे...

उद्घोषक : सुनो कि पौलुस ने चिल्लाकर क्या कहा...

पौलुस : चिल्लाते हुए, मल्लाहों, इस जहाज़ को न छोड़ो, हममें से कोई नहीं मरेगा, परमेश्वर जिसकी मैं सेवा करता हूं, हम सबको बचाएगा।

नाटक का दूसरा भाग : जहाज़ का टूटना (प्रेरितों के काम 27:31-44)

उद्घोषक : कहानी का दूसरा भाग बताने के बाद

कहें ''सुनो कि जहाज के कप्तान ने क्या कहा...''

कप्तान : चिल्लाते हुए, हम डूबे जा रहें हैं, पटरा लाओ, पटरे पर बैठकर सब लोग किनारे की ओर तैर जाओ।

नाटक का तीसरा भाग : आग और सांप (प्रेरित 28:1-6)

उद्घोषक : नाटक की कहानी का तीसरा भाग सुनाए (प्रेरित. 28:1-6) तब कहे-सुनें कि लोगों ने चिल्लाते हुए क्या कहा...

आग के पास बैठे लोग : चिल्लाते हुए कहते हैं-देखों ज़हरीले सांप ने उसे काट लिया है। उसने सांप को आग में झटक कर फैंक दिया है। उसका हाथ अभी तक सूज नहीं गया है।

पुबलियुस : मुझे बड़ा आश्यर्च है कि सांप ने तुम्हें हानि नहीं पहुंचाई। आपका परमेश्वर तो बड़ा सामर्थी है। कृपा आप मेरे घर आएं।

नाटक का चौथा भाग : पुबलियुस का पिता चंगाई पाता है। (प्रेरितों के काम 28:7-10)

उद्घोषक : प्रेरि. 28:7-10 पढ़ें या कहानी बताएं और कहें-माल्टा के लोगों ने चिल्लाते हुए यह कहा-

लोग : चिल्लाते हुए उसके देवता ने हमारे स्वामी के पिता को चंगा कर दिया है। कृपया मेरी बीमार माता जी के लिए भी प्रार्थना कर दें, कृपया मेरे भाई के लिए भी आकर प्रार्थना कर दें।

उद्घोषक : सबको बताएं कि नाटक समाप्त हो गया हैं, बच्चों का व सबका धन्यवाद करें।

प्रश्न पूछें : परमेश्वर पीड़ादायक परिस्थितियों के माध्यम से हमारे जीवन में भलाई किस प्रकार उत्पन्न कर देता है, इसके अन्य उदाहरण पूछिए (बच्चे व युवा बच्चे उदाहरण दें)

कलीसिया के अगुवे के सहयोग से बच्चों द्वारा प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित बातों का प्रबन्ध कीजिए :

- आराधना के समय नाटक प्रस्तुत करने के लिए।
- इस अध्ययन के प्रारम्भ में दिए गए प्रश्नों को युवाओं से पूछने के लिए।

- जो कविता या अन्य बात बच्चों ने तैयार की हो उसे प्रस्तुत करने के लिए।

कंठस्थ कीजिए : रोमियों 8:28

एक चित्र बनाएं जिसमें एक सांप अग्नि में गिरता हुआ दिखाया गया हो। बच्चे भी तस्वीर बनाएं, बड़े छोटे बच्चों की सहायता करें। फिर अगली बार आराधना के समय चित्र दिखाया जाए और समझाया जाए कि यह चित्र दर्शाता है कि परमेश्वर शैतान को हरा देता है।

कविता :भजन संहिता 69 से तीन बच्चे कुछ पद पढ़कर सुनाएं।

''हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर, मैं जल में डूबा जाता हूं। मैं बड़े दलदल में धंसा जाता हूं, और मेरे पैर कहीं नहीं रूकते, मैं गहरे जल में आ गया हूं और धारा में डूबा जाता हूं। मैं पुकारते-पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है।''

मैं तेरे भवन की धुन में जलते-जलते भस्म हुआ। और जो निन्द वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है। लोगों ने मेरे खाने के लिए इन्द्रायन दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे सिरका पिलाया।

अपने दास से अपना मुंह न मोड़, क्योंकि मैं संकट में हू, फुर्ती से मेरी सुन ले। हे परमेश्वर, तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर बैठा।''

बड़े बच्चे कविता प्रस्तुत करें या कोई गीत गाएं, या साक्षी दें जो सिद्ध करें कि परमेश्वर बुराई से भी भलाई उत्पन्न कर देता है।

प्रार्थना :''हे प्रिय परमेश्वर, हमें आप पर विश्वास व भरोसा है कि जो बुरी घटनाएं हमारे जीवन में घट जाती हैं उनके माध्यम से आप हमारे व दूसरों के लिए अच्छी बात उत्पन्न कर देते हैं। हमारी सहायता कीजिए कि हमारी परिस्थितियां चाहे खराब ही क्यों न हों, हम आनन्द के साथ आपकी सेवा करते रहें। यीशु के नाम में आमीन...

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net